अब एक आया, कारण और कार्य की बड़ी तकरार। तीसरा बोल कारण-कार्य। कारण-कार्य तीसरा बोल है। निमित्त कारण से यहाँ कार्य हो, ऐसा व्यवहारनय के कथन आये, ऐसा ही माने तो मिथ्यात्व है। है उसमें, देखो। तीन बोल में तो पूरी व्यवहारनय की जितनी कथनपद्धति है, सब को समाविष्ट कर दिया है। व्यवहारनय '**कारणकार्यादिक को**....' आदि में आ गया न? स्वद्रव्य-परद्रव्य, उनके भाव आदि। कारण व्यवहार और निश्चय कार्य, निमित्त कारण और शुद्ध उपादान में लाभ हो, ऐसा व्यवहारनय का कथन कारण कोई और कार्य कहीं और जगह, मिलाकर बात करती है। ऐसा माने तो उसे मिथ्यात्व लगता है। है न भाई? ये कारण-कार्य की तकरार।

यहाँ टोडरमलजी कहते हैं, '**कारणकार्यादिक को किसी को किसी में मिलाकर निरूपण करता है;**...' भगवान की प्रतिमा के दर्शन से शुभ परिणाम होते हैं। वह कारण और यहाँ कार्य, व्यवहारनय कथन करती है। ऐसा माने, उससे हुआ माने तो मिथ्यात्व लगता है। समझ में आया? अथवा सम्यग्दर्शन के जो कारण वेदना कही, देवऋद्धि कही, श्रवण कहा, वह था तो यहाँ सम्यग्दर्शन उसके कारण, उस कारण के कारण यहाँ कार्य हुआ, ऐसा व्यवहारनय का कथन शास्त्रों में आवे, उसे जानना चाहिये। लेकिन माने कि वह कहा सो बराबर है, तो कारण-कार्य का बड़ा विपरीतता उत्पन्न होकर उसे मिथ्यात्व लगता है। उसको धर्म होता नहीं। विशेष कहेंगे....

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

वीर सं.-२४८८, चैत्र सुद-९, शुक्रवार, दि. १३-४-१९६२,
सातवाँ अधिकार, प्रवचन नं. १६

यह मोक्षमार्गप्रकाशक, उसका सातवाँ अध्याय है। उसमें अधिकार मुद्दे की, मूल रकम की बात कही है। मूल रकम कहते हैं न? मूल रकम। जैन में यानी दिगंबर संप्रदाय में जन्म हुआ होनेपर भी, अन्य संप्रदाय में जन्म हुआ हो उसको तो सत्य बात की परंपरा उसके शास्त्र में, गुरु में होती नहीं। लेकिन जो जैन संप्रदाय दिगंबर के नाम से जाना जाता है, उसमें जन्म होनेपर भी निश्चय क्या, व्यवहार क्या, उसके

भान बिना व्यवहार के जितने कथन शास्त्र में आये उनको सच्चे मान ले तो वह मिथ्यादृष्टि हैं, जैन में दिगंबर श्रावक और मुनि नाम धराते हो तो भी। वह अधिकार चलता है। समझ में आया?

पहला तो वह दृष्टान्त दिया टोडरमलजी ने, कुन्दकुन्दचार्य महाराज का, कि देख भाई! शास्त्र में दो प्रकार के कथन चले हैं। एक निश्चय का अर्थात् सच्चा अर्थात् स्वद्रव्याश्रित कथन, वह सच्चा। और एक, परद्रव्य के आश्रय से स्व में कुछ होता है, कर्म के कारण विकार होता है, शरीर को जीव कहना, मतिज्ञान को रूपी कहना इत्यादि जो उपचार से शास्त्र में जो कथन आये हैं, उनको ऐसे ही मान ले कि वह बराबर है, तो वह मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया? क्योंकि व्यवहार सत्य बात कहता नहीं, परन्तु व्यवहार कोई अपेक्षा से निमित्त का ज्ञान कराने को, संयोग का ज्ञान कराने को उपचार से आरोप से अनेरा प्रकार से व्यवहार की कथनी चलती है। इसलिये कुन्दकुन्दाचार्य का (समयसार की) ११वीं गाथा का आधार दिया कि व्यवहार है सो असत्य निरूपण करता है। व्यवहार के वचन चार अनुयोग में द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, कथानुयोग आदि में आवे तो वह सब व्यवहार परद्रव्याश्रित जितने कथन आत्मा के आये, ऐसे कथन को ऐसा है, ऐसा मान नहीं लेना। समझ में आया?

और सत्य निश्चय बात हो तो, आत्मा आत्मा से है, उसकी पर्याय आत्मा से है, उसका धर्म यानी अपनी शांति अपने में अपने कारण से है। ऐसे जो कथन निश्चय के सच्चे हो, उसकी सच्ची उस प्रकार से श्रद्धा करे तो उसको सम्यग्दर्शन हो। लेकिन व्यवहार की श्रद्धा करे कि शास्त्र में ऐसा कहा है, ऐसा कहे है, उसको उस तरह सच्चा मान ले तो उसकी श्रद्धा मिथ्यात्व होकर परिभ्रमण जीव करे। एक वह दिया।

दूसरा दृष्टान्त अमृतचंद्राचार्य का दिया। सर्वत्र अध्यवसाय अखिलं, व्यवहार का। भवगान त्रिलोकनाथ तीर्थंकरदेव ने पर की हिंसा करुँ, असत्य बोलुँ, चोरी कर सकुँ, हाथ से ले सकुँ, शरीर से विषयसेवन कर सकुँ, ऐसी मान्यता को भगवान ने मिथ्यात्व कहा है। समझ में आया? शरीर से परिग्रह ले सकुँ, परिग्रह छोड़ सकुँ, अथवा दया के भाव, पर की दया पाल सकुँ, मैं सत्य वाणी द्वारा बोल सकुँ, मैं असत्य अथवा अदत्त को ले नहीं सकता. मैं शरीर से ब्रह्मचर्य पाल सकता हूँ, शरीर से मैं नग्नदशा कर सकता हूँ, ऐसे अभिप्राय को व्यवहार गिनकर उसे मिथ्यात्व कहा है। क्योंकि पराश्रित सब कथन हैं। समझ में आया? बाबुभाई! यह तो इसमें व्यवहार-निश्चय का निचोड़ आता है। ये सब तकरार करतें है न? हैं?

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- कहा न यह? व्यवहार के कथन वह अन्यथा कथन हैं, ऐसा जानकर

उसकी श्रद्धा छोड़ देनी। व्यवहार के कथन शास्त्रों में, सर्वज्ञ के व्यवहारआज्ञा के कथन शास्त्रों में हो उसकी भी श्रद्धा छोड़ देनी कि वह बात वैसे नहीं है। समझ में आया? व्यवहार से निश्चयआत्मा ज्ञानानंद शुद्ध पर द्रव्य की कोई भी क्रिया का कर्ता, धर्ता आत्मा तीन काल तीन लोक में नहीं है। व्यवहार से कहने में आया हो कि जीव सो शरीर है, जीव पर की दया पाल सकता है, ऐसे कथनों को उस प्रकार मान ले तो उसको मिथ्यादृष्टि कहने में आता है। समझ में आया?

एक दृष्टान्त कुन्दकुन्दाचार्य की ११वीं गाथा का दिया, एक अमृतचंद्राचार्य के कलश का दिया। अब आता है, कुन्दकुन्दाचार्य की मोक्षपाहुड़ की ३१वीं गाथा। भगवान कुन्दकुन्दाचार्य ने ऐसा कहा है कि जो व्यवहार में सोया है वह योगी निजकार्य में जागता है। अर्थात्? जो, पर का कार्य कर सकता हूँ, मैं राग का कार्य करूँ तो मुझे लाभ हो, व्यवहार का काम दया, दान, व्रत का विकल्प करूँ तो मुझे लाभ हो, ऐसा माननेवाला व्यवहार में जागता है। व्यवहार में जागता है। आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान में सो गया है। समझ में आया?

और व्यवहार में सोया है अर्थात् पर का शरीर, वाणी, परदेश का काम, कुटुम्ब का कोई भी काम मैं कर नहीं सकता और मेरे में रागादि आये वह भी मेरी मूल चीज नहीं है। उसमें सोया है अर्थात् उसकी जागृत दशा अर्थात् उसकी रुचि जिसने छोड़ी है और अपने कार्य में जागता है। मैं ज्ञान हूँ, आनंद हूँ, शुद्ध हूँ, पवित्र हूँ ऐसा आत्मा का त्रिकाली परमानंद ज्ञायकभाव, उसकी श्रद्धा, ज्ञान और रमणता में अपने कार्य में जागता है, वह मुनि को सच्चा और उस धर्मी को सच्चा कहने में आता है।

तथा जो व्यवहार में जागता है, परन्तु व्यवहार की क्रिया कर्तव्य करके मेरा कार्य है, दया मैं पाल सकता हूँ, दया के भाव से मुझे धर्म होता है। कठिन कथन, जगत की बात, जगत की बात। मैं पर की दया पाल सकूँ, परद्रव्य की क्रिया कर सकूँ, शरीर द्वारा आचरण कर सकता हूँ, ऐसी मान्यता में व्यवहार में जो जागता है, व्यवहार में ज्ञान को जोड़ा है, उसमें एकाकार होता है, वह अपने कार्य में सोया है। मैं एक ज्ञाता-दृष्टा हूँ, जानने-देखनेवाला हूँ, ऐसी जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान की क्रिया, व्यवहार में जागनेवाले निश्चय में सोये हैं। समझ में आया? सुनाई देता है कि नहीं बराबर? आप से कुछ कम होगा। है न? कहो, समझ में आया इसमें? सोभागचंदभाई! उसमें लिखा है, हाँ! शांतिभाई! क्या कहते हैं देखो।

आत्मा भाषा बोल सकता है, आत्मा वाणी कर सकता है, आत्मा दूसरे को समझा सकता है, वह समझे तो मेरे से समझ सकता है--ऐसे जो व्यवहार के कथन,

दिव्यध्वनि से अनंत आत्मा तिर गये, भगवान के दर्शन से सम्यग्दर्शन प्राप्त करे, ऐसे जितने व्यवहार के कथन हैं उसको सच्चा माने तो वह व्यवहार में जागता है और आत्मा के धर्मकार्य में वह सो गये हैं। समझ में आया? नवनीतभाई!

मुमुक्षु :-- सच्ची बात है।

उत्तर :-- सच्ची बात तो खुल्ली यह है। छाछ लेने जाये और दोहनी छिपाये ऐसा चलता है? हमारे काठियावाड़ में ऐसी कहावत है, घर में महेमान आये हो। छाछ समझते हो, मठ्ठा। छाछ दस शेर चाहिये, हंमेशा तो दो शेर आती हो, लेकिन दस शेर छाछ चाहिये तो बड़ी दोहनी होती है न? दोहनी तो पहले होती थी, अब तो पतीला हो गया। चौड़े मुँहवाला बरतन आगे रखे, देखो! दस शेर का बरतन है, दस शेर छाछ लेने आया हूँ आज, दस शेर डालना। रोज तो दो शेर चाहिये थी, क्योंकि मात्र रोटी के साथ खाने जितनी। लेकिन यह तो दस शेर चाहिये, कढ़ी करनी है, फलाना करना है, ढीकना करना है। छाछ लेने जाये वहाँ दोहनी अर्थात् बरतन छिपाये नहीं, आगे करके रखे कि लो, इतना चाहिये।

ऐसे भगवान द्वारा कहे गये निश्चय और व्यवहार के कथन, उनके व्यवहार की कथन की जितनी पद्धति शास्त्र में आवे, उन सब को ऐसा मान ले कि वह भी सत्य है, तो वह मिथ्यादृष्टि है। उसे धर्म का सम्यग्दर्शन होता नहीं। कहो, समझ में आया? ये कहा व्यवहार, ये कहा व्यवहार। कौन ना कहते हैं? सुन न। भगवान की स्तुति से मुझे धर्म होता है, ऐसा कथन शास्त्र में आवे। भगवान की शास्त्र करते हुए, पर भगवान की हाँ! देहादि की क्रिया आत्मा करे और भगवान की स्तुति का राग करे उससे आत्मा को लाभ हो, ऐसा कथन कहीं आया हो तो उसे मानना कि वह ऐसा है नहीं। समझ में आया?

तो व्यवहार में जागता है, शास्त्र में जितनी व्यवहार-कथनी, दया, दान, व्रत के परिणाम की और देह और वाणी की क्रिया चली हो, उसको जो सच्चा माने कि आत्मा कर सकता है और उससे लाभ होता है, वह निश्चय में अपने कार्य में सोये हैं। वह अपना कार्य कर नहीं सकते। मैं जानने-देखनेवाला हूँ। राग, देह और वाणी की क्रिया मेरी क्रिया नहीं है ऐसा मानता नहीं है वह निश्चय में सोया है और व्यवहार में जागता है। मूलचंदजी! बड़ी बात है यह। समझ में आया? आहाहा..! रतनचंदजी! सभा में रतनचंदजी की आवाज़ कितनी निकलती है! वह रतनचंदजी की आवाज़ है, यह रूपचंदजी की आवाज़ है, ऐसा बोलना व्यवहार का कथन है। ऐसा माने लेना कि उसका कथन है, वह मिथ्यादृष्टि है। सोभागचंदभाई! अपने मंडली में ऊतारते हैं, न्याय ऊतरे तो उसे मालूम पड़े कि कैसे है। समझ में आया?

इस आदमी की भाषा ऐसी सुंदर है कि जगत धर्म प्राप्त कर ले। ऐसे कथन शास्त्र में चले हो, उसे ऐसा ही मान ले तो वह मिथ्यादृष्टि है। पर के कारण धर्म प्राप्त हो, वह कथन व्यवहार के सच्चे नहीं है। अन्यथा कथन, वह धर्म समझता है उसके कारण, उस वक्त निमित्त कौन था उसका ज्ञान कराने को ऐसा कथन चला है। लेकिन ऐसा ही मान ले कि उससे प्राप्त होता है, ऐसा माननेवाला मित्यादृष्टि और अज्ञानी है। मूलचंदभाई! समझ में आया? हिन्दुस्तान में बहुत फ़र्क़ है।

कहते हैं, '**इसलिये व्यवहारनय का श्रद्धान छोड़कर...**' इसलिये आत्मार्थी को, सत्यकामी को चार अनुयोग--शास्त्र चलते हैं, उसमें आत्मा के अलावा जितना परद्रव्य के आश्रय से कथन चले उन सब की श्रद्धा छोड़ देनी चाहिये कि वस्तु का स्वरूप ऐसा है नहीं। '**निश्चयनय का श्रद्धान करना योग्य है।**' निश्चय नाम स्व तत्त्व स्वतंत्र आत्मा है, अपने से ज्ञान, दर्शन और आनंद प्राप्त कर सकता है, पर से नहीं, राग से नहीं, सम्यग्दर्शन देव-गुरु और शास्त्र के निमित्त से नहीं, भगवान के दर्शन से समकित पाता नहीं, ऐसा जो निश्चय का कथन उस अनुसार माने तो उसकी श्रद्धा सच्ची होती है। बड़ी कठिन बात। समझ में आया? नरेशचंदजी! ऐसी बात है, भैया! आहाहा..!

सोनगढ़ में तो व्यवहार का लोप हो जाता है, ऐसा लोग कहते हैं। लेकिन व्यवहार है उसका लोप करते हैं कि नहीं हो उसका? है, रागादि आता है तो पर की क्रिया पर के कारण से (होती है)। भगवान की पूजा में ऐसा हाथ पड़े तो आत्मा कर सकता है ऐसा हाथ? तीन काल तीन लोक में नहीं। यह तो जड़ मिट्टी है। उसकी पर्याय का होना जड़ के कारण से है। आत्मा व्यवहार से तो करता है न? क्या व्यवहार से करता है? व्यवहार और निश्चय तो दो विरोध है। निश्चय कहता है कि कर सकता नहीं और व्यवहार कहता है कर सकता है। वह व्यवहार का कथन अन्यथा है। शास्त्र में भी अन्यथा चला है। ऐसे मान ले तो मिथ्यादृष्टि होती है। समझ में आया?

११वीं में आता है न? ११वीं गाथा है न? देखो! इसमें नहीं आता है? किसने यह कहा? जयचंद्र पंडित। देखो ११वीं गाथा में, समयसार। '**प्राणियों को भेदरूप व्यवहार का पक्ष तो अनादि काल से ही है...**' राग से धर्म होगा और गुण-गुणी भेद करके आत्मा समझा जायेगा, ऐसा भेद का पक्ष अनादि काल से अज्ञानी का चला आया है। एक बात। '**और इसका उपदेश भी बहुधा सर्व प्राणी परस्पर करते हैं।**' व्यवहार से लाभ होता है, निश्चय एक ओर पड़ा रहे, निमित्त के कारण लाभ होता है, उपादान से लाभ होता है वह बत छूट गयी है। ऐसे उपदेश को बहुधा सर्व प्राणी परस्पर करते हैं। दो बात। 'और जिनवाणी में व्यवहार का उपदेश...' चार

अनुयोग में... जयचंद्र पंडित इसका अर्थ करते हैं। जयपुर के जयचंद्र पंडित थे। कहते हैं, '**जिनवाणी में व्यवहार का उपदेश शुद्धनय का...**' निश्चयनय का निमित्त देखकर, '**हस्तावलम्ब (सहायक) जानकर बहुत किया है;...**' शास्त्र में ऐसा व्यवहार का उपदेश बहुत चला है। '**किन्तु उसका फल संसार ही है।**' समझ में आया? जैन शास्त्र में कहे हुए (कथन), परद्रव्य का आत्मा करे, आत्मा का परद्रव्य करे, गुरु से ज्ञान होता है, ज्ञान था तो ज्ञेय.... यहाँ मेरा ज्ञान हो तो परवस्तु को आना ही पड़े, ऐसी पराधीनता की बात जो हो उसको माने उसको यहाँ मिथ्यादृष्टि कहते हैं। समझ में आया? लो।

लोगों को अनादि से राग से धर्म होता है, दया, दान से होता है, और गुण-गुणी का भेद समझाने के लिये तब भेद के कारण अभेदता प्रगट होती है ऐसा पक्ष अज्ञानी को अनादि से है। दूसरी बात, परस्पर उस ही बात की प्ररूपणा चलती है। व्यवहार चाहिये, व्यवहार चाहिये, व्यवहार हो तो निश्चय हो, ऐसा उपदेश परस्पर जैन के एकान्ती मिथ्यादृष्टि निश्चय को नहीं समझनेवाले ऐसी बातें किया करते हैं। दो (बात हुई)। जैनशास्त्र को खोजे तो भी व्यवहार का निमित्तपना देखकर बहुत उपदेश आया है। किन्तु तीनों का फल संसार है। समझ में आया? संसार यानी बन्धन है, उसमें सम्यग्दर्शन होता नहीं। समझ में आया? देखो, ११वीं गाथा, यहाँ '**ववहारोऽभूदत्थो**' लिया है न? वह आधार दिया है।

यहाँ टोडरमलजी कहते हैं, '**इसलिये व्यवहारनय का श्रद्धान छोड़कर निश्चयनय का श्रद्धान करना योग्य है।**' '**व्यवहारनय स्वद्रव्य-परद्रव्य को...**' जीव अपना स्वरूप भिन्न है, फिर भी शरीर को जीव व्यवहारनय कहती है। ऐकेन्द्रिय जीव, दो इन्द्रिय जीव, तीन इन्द्रिय जीव, चौ इन्द्रिय जीव, पंचेन्द्रिय जीव, मनुष्य जीव, देव जीव, पर्याप्त जीव, स्त्री जीव, पुरुष जीव, पर शरीर को जीव कहने का व्यवहारनय का कथन है। उसे ऐसा ही मान ले तो मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया? पहले तो ऐकेन्द्रिय जीव कहा, फिर कहते हैं, माने तो मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया?

व्यवहार का कथन ऐसी पद्धति का है, हाथी के दाँत बाहर के अलग और चबाने के अलग। मालूम है? हाथी होता है न हाथी? चबाने का दाँत अन्दर हो और बड़े बाहर हो उससे चबाया नहीं जाता, वह तो सोने की चूड़ियाँ पहनने में आये। सोने की चूड़ियाँ पहनकर शोभा दिखे। ऐसे व्यवहारनय के कथन सोन की चूड़ियाँ पहनने जैसा है। वह खाने के काम के नहीं। ऐसे व्यवहारनय के कथन निमित्त का ज्ञान कराने को है, किन्तु आत्मा का अनुभव करने में, आत्मानंद का भोजन करने में व्यवहार के कथन--दाँत कुछ काम के नहीं। समझ में आया? समझ में आता है?

'**व्यवहारनय स्वद्रव्य-परद्रव्य को...**' लो। वह जड़ को चैतन्य कहे, जड़ को जीव कहे, सचेत शरीर ऐसा कहे, लो। आता है कि नहीं? सचेत शरीर आता है न? शरीर को सचेत कहा? कोई कहे कि यह मुरदा है? मुरदा है, सुन न। यह तो मुरदा है, मिट्टी है। भगवान आत्मा भिन्न है। दोनों का कार्य भिन्न-भिन्न है। फिर भी व्यवहारनय शरीर को सचेत कहे, जीववाला कहे, वह ऐसे है नहीं परन्तु शरीर में जीव का निमित्त देखकर सचेत है ऐसा आरोप करने में आया है। इसलिये वह मान्यता छोड़ देनी चाहिये। समझ में आया?

'**उनके भावों को...**' एक द्रव्य का भाव--गुण को, अन्य द्रव्य के गुण की व्याख्या करे। समझ में आया? ये जीव और अजीव दो का ज्ञान हो, इसलिये वह जीव अजीव को ही ज्ञान कहे। क्या कहा समझ में आया? आत्मा के ज्ञान में जीव-अजीव निमित्त हैं, जीव-अजीव निमित्त हैं, उस अजीव को ज्ञान कहना, गुण यहाँ का और गुण कहना वहाँ का, वह कथन व्यवहार का है। ऐसा ही मान ले तो उसको मिथ्यादृष्टिपना लगता है। फिर भले महाव्रत पालता हो, दया पालता हो और भक्ति, पूजा और यात्रा समेदशिखर की करता हो, परन्तु जो परद्रव्य का गुण, अपने गुण में खताता है (वह मिथ्यादृष्टि है)।

शास्त्र में कहा है ऐसा आरोपित कथन से, सर्वगत। आत्मा का ज्ञान सर्वव्यापक हो गया। उस अपेक्षा से सब ज्ञानरूप हैं, सब जड़ और चैतन्य इस ज्ञानरूप है। ऐसा कहने में अपने ज्ञान में वह चीज निमित्त थी, इसलिये दूसरे जीव को और दूसरे जड़ को भी ज्ञान कहने में आया। लेकिन वैसा ही मान तो वह मिथ्यादृष्टि है।

'**उनके भावों को व कारणकार्यादिक को...**' जड़ के कारण जीव में लाभ हो, जीव के कारण जड़ चले, आत्मा के कारण वाणी बोलने में आये और वाणी के कारण दूसरे को ज्ञान हो, ऐसा जो कारण-कार्य का, दूसरा कारण और दूसरे में कार्य, ऐसा कथन किसी का किसी में मिलाकर व्यवहारनय कथन करती है। आप के चावल में नहीं होता है? क्या कहते हैं उसे? कनकी मिलाते हैं न? चावल में कनकी डाले, मिरची में बीज डाले, क्या कहते हैं? आता है न? कँकरी डाले। यहाँ तो मुझे कँकरी कहना है। बीज डालते हैं। चोरी में नहीं आता है? अतिचार। भाषा भूल गये। वह आता है न अदत्त में? मिलाकर दे। मेल मिलावट वह आप की भाषा है। हमारी भाषा याद नहीं आ रही है। कहो, समझ में आया? एकदूसरे में मिलावट करे। चावल में (कनकी मिलाये)। ये अभी देखो न, धोखा (करते हैं)। ओहोहो..! मिरची में लाल लकड़ी का चूरा डालकर मिरची बेचे। हलदी में... ऐसा धोखा (करते हैं)।

इस प्रकार कहते हैं, शास्त्र में जितने व्यवहारनय के कथन (आये कि) इस कारण से यहाँ हो, देव से आत्मा को समकित हो, गुरु से आत्मा को ज्ञान हो, शास्त्र से आत्मा को अन्दर ज्ञान हो, शास्त्र कारण और ज्ञान कार्य ऐसे कथन व्यवहार एकदूसरे को मिलावट करके करता है। ऐसा ही माने तो मिथ्यात्व है। है उसमें? है कि नहीं? .. भाई! देखो उसमें लिखा है, हाँ! उसका अर्थ चलता है। सोभागभाई डॉक्टर बनाते हैं ... अन्दर लिखा है उसका अर्थ चलता है। कहो, समझ में आया? आहाहा..! यह टूकड़ा बराबर मेल में आ गया, भाई! यहाँ आ गया, कुदरत देखो न। आज रामनवमी है, कल का बड़ा महोत्सव का दिन है और आज के दिन यह अधिकार आया है, हाँ! चलते-चलते आ गया है यह। महान अधिकार, जैन सिद्धांत के रहस्य का बीज है। आहाहा..! निश्चय-निश्चय, व्यवहार और निश्चय दोनों सच्चे, दोनों उपादेय, दोनों अंगीकार करने लायक, मूढ है, मिथ्यादृष्टि भ्रम में पडा है, उसको सत्य की खबर नहीं है। नेमचंदभाई! व्यवहार, व्यवहार की बातें चलती है न? आप के यहाँ बहुत चलती है। नमः समयसाराय--अर्थ किया तो भड़क गये। बाबुभाई मालूम है कि नहीं? नमः समयसाराय। कहा, आत्मा को नमन करे उसका नाम नमः समयसार है। भगवान को नमन करे वह तो विकल्प और व्यवहार है। हाय.. हाय..! ये तो व्यवहार को मानते नहीं। सुन न।

व्यवहार के जितने कथन पराश्रय परभक्ति, परपूजा, परदया, परदान वह आत्मा कर सके और उससे लाभ होता है, ऐसे कथन व्यवहारनय कोई कारण को किसी के कार्य में मिलाकर बात करती है, इसलिये ऐसे श्रद्धान से मिथ्यात्व है। सोभागचंदभाई! है उसमें? मिथ्यात्व है। कहाँ गया वह निःशंकपना? कितने साल हुए? बारह हुए, बारह। पहली बार आये थे न? बारह वर्ष हुए। बारह पूरे हो गये। अरे.. भगवान! तू कौन है? और परवस्तु कहाँ है? उसकी कोई भी पर्याय हो, वह तेरे से हो ऐसा कहीं लिखा हो (तो) ऐसा मत मानना। ऐसा मानना कि वह होते वक्त इस राग की उपस्थिति देखकर उससे होता है ऐसा कहने में आया है, लेकिन वह बात सच्ची नहीं है। समझ में आया?

सत्य और असत्य में वर्तमान में बहुत फेरफार (हो गया), पूरी बात बदल गयी है। आकाश फटा हो उसको पैवंद कैसे करें? इसप्रकार वर्तमान में प्ररूपणा (ऐसी चलती है कि), व्यवहार से होता है, व्यवहार से कर सकते हैं, व्यवहार से उपचार से तो कर (सकते हैं), क्या उपचार व्यर्थ है? सुन न अब, वह तो ज्ञान कराने को (कहा है)। एक तो असद्भुत व्यवहारनय ही उपचार है और असद्भुत का उपचारनय। आहाहा..! क्या कहते हैं? वह तो असद्भुत व्यवहारनय से कथन शास्त्र में चला हो

कि कर्म से विकार होता है, इससे यह होता है, आत्मा को राग हुआ इसलिये कर्मबन्ध होता है, वह तो असद्भुत व्यवहार यानी उपचार के कथन हैं, सच्चे हैं नहीं। उसमें असद्भुत उपचार का उपचार आये। यह मेरा है, उससे यह हुआ और फलाने से यह (हुआ), ऐसे सब व्यवहार के कथन कहे, वह मिलावट करके कहा है। चावल में कँकर डालकर बातें कही है। शास्त्र को ऐसा कहने का क्या कारण होगा? कहा न, निमित्त का ज्ञान कराने को। चावल में कँकर, शक्कर में... समझ में आया? क्या कहते हैं? चूरा, पत्थर का चूरा बहुत मुलायम होता है? चोरोडी होती है न? चिरोडी का प्लास्टर है। चिरोड़ी आती है न? पत्थर, टक-टक पत्थर आता है, बहुत टकटक काँच जैसा। चिरोड़ी है पत्थर। बारीक चूरा करे तो चमकता है, उसको शक्कर में डाले। व्यवहारनय, शक्कर में चिरोड़ी डाली हो ऐसा कथन करती है। ऐसा यहाँ कहते हैं। सत्य बात को निमित्त के कथन द्वारा असत्य बात करती है, उसको ऐसी ही मान ले तो वह अज्ञानी और मिथ्यादृष्टि है, उसको जैन नहीं कहते हैं। समझ में आया? बहुत सूक्ष्म बात है, भैया! यह बात कुदरती मोक्षमार्गप्रकाशक चलता है। ओहोहो..!

मुमुक्षु :-- मुद्दे की बात है।

उत्तर :-- मुद्दे की बात है, समस्त जैनशास्त्र का निचोड़ निश्चय और व्यवहार। वह क्या कहता है? देखो भाई! मक्खन निकालना हो न, मक्खन, तो डोरी तो एक है, दो सिरा लेना। कभी खीँचना, कभी यह खीँचना, कभी वह खीँचना। कभी व्यवहार से लाभ, कभी निश्चय से लाभ। ऐसा दृष्टान्त देकर पुरुषार्थसिद्धयुपाय का (आधार देते हैं)। ग्वालियन होती है न? ग्वालियन। ग्वालियन नहीं? डोरी का एक सिरा खीँचे, दूसरा ढीला छोड़े, मक्खन निकालते समय। इसप्रकार आप ऐसा करो कि जब निश्चय को मुख्य करते हो तो व्यवहार को गौण करके कथन करो और व्यवहार को मुख्य करो तब निश्चय को गौण करो। ऐसा है नहीं। वह तो ज्ञान करने की बात है। वस्तु का स्वआश्रय लेने में और पर आश्रय छोड़ने में उस कथन की बात वहाँ लगा दे, वह बात मिथ्यादृष्टि लगाते हैं। समझ में आया?

कहते हैं, अरे..! व्यवहारनय ऐसी व्यभिचारिणी नय है। समझ में आया? एक परमाणु ने दूसरे परमाणु को परिणमित कर दिया, कर्म के उदय से आत्मा को विकाररूप परिणमित कर दिया और अच्छा निमित्त ऐसा पड़ा कि जिसके प्रभाव से सम्यग्दर्शन हो गया, ऐसा सब कथन (पढ़कर) ऐसा ही मान ले (वह) मिथ्यादृष्टि है। सोभागचंदभाई! कठिन बात आयी है, बराबर आयी है अब की बार। बहुत बात आते होंगे लेकिन अब की बार... कहाँ गये? ताराचंदजी नहीं आये? बुखार आया?

'**इसलिये उसका त्याग करना।**' देखो! व्यवहारनय का कथन, एक द्रव्य को

दूसरे द्रव्य के साथ मिलाकर एक पर्याय को--अवस्था--अपनी दशा (को), दूसरी पर्याय को मिलाकर कारण-कार्य बताकर जो कथन करे (ऐसी) श्रद्धा छोड़ देना। लेकिन ऋषि मुनियों ने कहा और श्रद्धा छोड़ देनी? लेकिन ऋषि मुनि यह क्या कहते हैं? यह ऋषि मुनि तो कहते हैं कि '**ववहारोऽभूदत्थो**'। जितने हमारे व्यवहार के कथन आये उसे अन्यथा निमित्त अपेक्षा करके, निमित्त अपेक्षा बताने को उपचार से अन्यथा कथन किया है। बड़ा विरोध वर्तमान में। बाबुभाई! आहाहा..!

किसका त्याग करना? शास्त्र में जो व्यवहार के कथन (आये), एक द्रव्य, एक गुण, एक पर्याय अन्य द्रव्य, अन्य गुण और अन्य पर्याय को मिलाकर बात करी हो ऐसी श्रद्धा को छोड़ देना (कि) ऐसे है नहीं। उस श्रद्धा का त्याग करना। बात कठिन। मूलचंदजी! कठिन बहुत है, हाँ! सब ऐसा कहे, ओहो..! ऐसा ऐसा? अपने ऐसा करेंगे तो लोग धर्म प्राप्त करेंगे। वह तो अपना शुभ विकल्प ऐसा आता है, बस इतना। दूसरे की पर्याय हो कि न हो, अपने कारण से होती है ऐसा तीन काल तीन लोक में बनता नहीं। कथन व्यवहार का ऐसा, निमित्त कौन है, उसको पहिचानने में कथन ऐसा आता है। लो, यह टोडरमलजी, मोक्षमार्गप्रकाशक (बनाया), गृहस्थाश्रम में थे, हाँ! स्त्री, पुत्र था। लेकिन सिद्धांत का मर्म को पाकर, जगत सिद्धांत के नाम से व्यवहार की बात सच्ची मान लेते हैं, उसके लिये फैंसला कर दिया कि तुम कहते हो ऐसी बात है नहीं। क्या कहा?

व्यवहारनय अर्थात् एक आत्मा के अलावा, कोई भी परमाणु स्वद्रव्य के अलावा, कोई भी जीव के अलावा, अन्य द्रव्य को, अन्य गुण को, अन्य अवस्था से दूसरे में कुछ हो, ऐसे कथन कारण-कार्य के आये उसे मिलाकर कथन करे उसकी मान्यता रखनी सो मिथ्यात्व है, इसलिये उसका त्याग करना।

'**तथा निश्चयनय...**' सच्ची दृष्टि, निश्चय नाम सच्ची दृष्टि, सच्चा ज्ञान '**उन्हीं को यथावत् निरूपण करता है,...**' देखो! उन्हीं को। जो व्यवहार कहता है उन्हीं को '**यथावत् निरूपण करता है,...**' व्यवहार कहे कि दिव्यध्वनि से ज्ञान होता है, निश्चय कहे कि होता नहीं। व्यवहार कहे कि नर्क में बहुत वेदना भोगे तो समकित होता है, निश्चय कहे कि होता नहीं। व्यवहार कहे कि भगवान के दर्शन से समकित होता है, निश्चय कहे कि आत्मा से होता है, पर सो होता नहीं। देखो, 'उन्हीं को' शब्दप्रयोग किया है न? उन्हीं को अर्थात् व्यवहार जितना कारण-कार्य एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में और एक पर्याय को दूसरी पर्याय में, एक गुण को दूसरे गुण में (मिलाकर कहे)। समझ में आया? जितने कथन किये, उपचार के बोल आये हैं, भाई! नव बोल आलापपद्धति में। आलापपद्धति में सब नव बोल (आये हैं)। द्रव्य में द्रव्य का उपचार, द्रव्य में

गुण का, द्रव्य में पर्याय का। गुण में द्रव्य का, गुण में गुण का, गुण में पर्याय का, पर्याय में द्रव्य का, पर्याय में गुण का, पर्याय में पर्याय का। ऐसे नव कथन आलापपद्धति में मूल पाठ में चले हैं। दृष्टान्त दिये हैं, यह स्त्री मेरी, यह मकान मेरा, यह देश मेरा, वह सब कथन झूठे हैं। समझ में आया? ये पैसे मेरा, इज्जत मेरी, धूल भी तेरी नहीं है, वह तो पर की वस्तु है। मात्र तेरे पास उस जाति का पुण्य का निमित्त और उसका संग देखकर, इसका पैसा, इसका पुत्र, इसकी पुत्री, इसका देश, इसका कपड़ा, इसका गहना, ऐसा व्यवहारनय कहती है, उसको ही यथावत् निश्चयनय प्ररूपण करती है कि कोई किसी का है नहीं। पुत्र का पिता नहीं, पिता का पुत्र नहीं, कपड़ा आत्मा का नहीं, आत्मा का कपड़ा नहीं। लुगडां समझते हो? कपड़ा।

गहना, चश्मा। यह चश्मा इसका है, व्यवहारनय कहे। निश्चयनय कहे कि, नहीं, उसका नहीं है, चश्मा चश्मा का है। व्यवहारनय कहे कि चश्मा पहनने पर ज्ञान का विकासित होता है देखने में, निश्चय कहे कि नहीं, अपने कारण आत्मा जानता है। चश्मा के कारण जानता नहीं। समझ में आया? बहुत फेर जगत में, भाई! शास्त्र के बहाने भी उलटे रास्ते पर चढ़ गये हैं, उसका यह कथन चलता है।

व्यवहारनय ऐसी बात करता है, एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य में... जैसे कि शरीर को सचेत कहा। निश्चय कहता है कि नहीं। शरीर सचेत नहीं है। एक भाव को दूसरे का भाव (कहे)। कर्म के कारण विकार होता है, ऐसा व्यवहार कहे। निश्चय कहे कि नहीं। विकार अपने से होता है, कर्म के कारण नहीं होता। व्यवहार कहे कि कर्म के कारण अब तक रखड़ा, निश्चय कहे कि नहीं, अपनी भूल के कारण रखड़ा है। समझ में आया?

कल वह आती थी, रात्रि को चला था न? कर्म का बोझा भारी। तो हमारे दुर्गादासजी हँसते थे। मालूम है कि नहीं? मालूम है, बराबर मालूम है। वह आये थे न रात्रि को? कर्म का बोझ ऐसा है कि उतार दो। कहीं पर आया तो था, तुम्हारी भक्ति में आया था। कर्म के जोर से हमें ऐसा हुआ है। ऐसी कोई बात आयी थी, भक्ति में वह शब्द आया था। दुर्गादासजी ने थोड़ा मेरे सामने देखा था। मैंने कहा, वह चलता है, ऐसी बातें--कथन चले। समझ में आया? दोपहर को था? चार बजे कोई आया था। कर्म के कारण से ऐसा होता है।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- हाँ, कर्म का भारी बोझा, आया था न? रात्रि को आया था? कर्म का बोझ, ऐसा बोझ। कर्म का बोझ। वह आया था। दोपहर को आया था। रात्रि को था, हाँ, मुझे रात्रि का मालूम है। ... तुमने दूसरा कोई प्रश्न किया था, लक्ष्य

का। लेकिन वह भी व्यवहार का कथन है। आत्मा पर कर्म का बोजा है नहीं, परन्तु आत्मा में जड़ कर्म निमित्त देखकर, आत्मा में कर्म है नहीं, स्वचतुष्टय में है नहीं, अपना आत्मा द्रव्य है, क्षेत्र उसका... क्या कहते हैं? अवगाहन, चौड़ाई, चौड़ाई, अपनी चौड़ाई असंख्य प्रदेश है, अपनी पर्याय अनंत गुण की वर्तमान में है और गुण त्रिकाल है। अपने में आत्मा है, उसमें कर्म नहीं, दूसरा द्रव्य नहीं। व्यवहारनय कहती है कि आत्मा में कर्म है, निश्चय कहता है कि नहीं। व्यवहार कहता है कि ज्ञानावरणीय से ज्ञान रुकता है, निश्चय कहता है कि नहीं। समझ में आया?

व्यवहारनय कहती है कि अंतराय कर्म से आत्मा का वीर्य रोका गया है, निश्चय कहता है कि नहीं, अपने कारण से रुका है, कर्म से रुका है वह व्यवहार का कथन है। आहाहा..! सुना नहीं, बात कभी सुनी नहीं। यूँ ही चलो, चलो धर्म.. धर्म.. धर्म। समझ में आया? व्यवहार कहता है कि पर की हिंसा कर सकता है। निश्चय कहता है कि पर की हिंसा कर सकता नहीं। निश्चय सत्य है, व्यवहार असत्य है। समझ में आया? व्यवहार कहता है कि पर की दया पालना, रक्षा करना, ऐसा व्यवहार का कथन आये शास्त्र में। निश्चय कहता है कि ऐसा है नहीं। पर की रक्षा तीन काल तीन लोक में आता कर सकता नहीं। मात्र पर की रक्षा के काल में जीव का दया का भाव निमित्त देखकर ऐसा आरोपित कथन आया है। ऐसा मान ले कि उसने दया पाली (तो) मिथ्यादृष्टि है।

सात व्यसन से, सात व्यसन के पाप से मिथ्यात्व का बड़ा पाप है। क्या कहा? सात व्यसन, उससे भी मिथ्यात्व (बड़ा पाप है)। उसमें है, देखो! छठवें अध्याय में देखो। नीचे है, नीचे। '**निन्दन्तु**' के ऊपर। पृष्ठ-१९८, है? '**निन्दन्तु**' के ऊपर बीच में। '**जिनधर्म में यह तो आम्नाय है कि पहले बड़ा पाप छुड़ाकर फिर छोटा पाप छुड़ाया है; इस मिथ्यात्व को सप्तव्यवसनादिक से भी बड़ा पाप जानकर...**' है शांतिभाई? भले .. है, शब्द तो यही है, पृष्ठ वही है, दूसरी कोई बात नहीं है। पृष्ठ वही है। मिथ्याश्रद्धा--व्यवहार कहता है ऐसा मानना मिथ्यात्व है और मिथ्यात्व का पाप सात व्यसनादिक से, शिकार, मांस, वेश्या का लंपटपना उस पाप से भी महान पाप जानकर पहले छुड़ाया है। कहो, समझ में आया?

'**इसलिये जो पाप के फल से डरते हैं, अपने आत्मा को दुःखसमुद्र में नहीं डुबाना चाहते, वे जीव इस मिथ्यात्व को अवश्य छोड़ो;...**' पहली मिथ्याश्रद्धा जरूर छोड़ो। '**निंदा-प्रशंसादिक के विचार से शिथिल होना योग्य नहीं है।**' अरे..! ऐसा करेंगे तो दुनिया में गिनती नहीं होगी, हमें मानेंगे नहीं, अपने अकेले हो जायेंगे, अपनी इज्जत है वह चली जायेगी, निंदा-प्रशंसा की दरकार छोड़कर मिथ्यात्व का पाप

पहले छोड़ना। दुनिया की प्रतिक्रिया क्या होगी उसका लक्ष्य करना नहीं। सोभागचंदभाई! अच्छी बात है? देखो! क्या बोलेंगे? ऐसा करेंगे तो कोई सेठ नहीं मानेंगे, सेठ पैसा नहीं देंगे, नौकरी नहीं मिलेगी, सत्य बात (मानेंगे तो) पुत्र की शादी नहीं होगी, पुत्र-पुत्री की शादी नहीं होगी, दुनिया की दरकार छोड़कर भगवान ने कहा ऐसे व्यवहार की श्रद्धा छोड़कर निश्चय की यथार्थ श्रद्धा करना। दुनिया की प्रतिक्रिया क्या होगी, मेरी इस बात से दुनिया क्या बोलेगी, मेरी कितनी इज्जत रहेगी, कितनी इज्जत चली जायेगी, इतनी इज्जत पचास साल से जमी है तो ऐसा सत्य कहने में... ए.. नाश हो गया, व्यवहार का लोप हो गया, ऐसा कहकर हमारी गिनती होगी नहीं। ऐसी दरकार नहीं करना। समझ में आया?

'**निश्चयनय...**' जो व्यवहारनय कहती है, २५६ पृष्ठ, '**उन्हीं को यथावत् निरूपण करता है,...**' व्यवहार कहे कि आठ कर्म से रुका, निश्चय कहे कि, नहीं। यह तकरार हुई, (संवत) २००६ की साल में। अरे.. भगवान कहते हैं, परम उपकारी, अनंत तीर्थंकर (कहते हैं कि) आठ कर्म के कारण रखड़ा। कहा, झूठ बात है, अपनी भूल से रखड़ा है। अपनी भूल से रखड़ा, कर्म तो परद्रव्य है। पर द्रव्य पर को रखड़ाये ऐसी तीन काल में ताकात है नहीं। '**किसी को किसी में नहीं मिलाता है;...**' एक बात यह कही कि व्यवहार जो कहता है उसको निश्चय निषेध करके, यथावत् जैसी वस्तु की स्थिति है उसको कहते हैं। '**किसी को किसी में नहीं मिलाता है;...**' निश्चय कोई किसी का कारण--इस कारण से यहाँ कार्य होता है और इस कारण से यहाँ कार्य होता है, ऐसा निश्चयनय मिलाकर, मिलावट करके बात नहीं करती।

यह लकड़ी अँगूली से ऊँची हो ऐसी बात निश्चयनय नहीं करती। व्यवहारनय कहती है कि अँगूली तो ऊँची हुई, कुम्हार था तो घड़ा हुआ। व्यवहारनय कहती है। निश्चयनय कहती है, घड़ा मिट्टी से हुआ, कुम्हार से हुआ नहीं, ऐसा निश्चयनय कहती है। समझ में आया? ओहोहो..! बड़ी बात भाई इसमें। भीखाभाई! इसमें गुरु की कुछ कृपा हो, वह सब ऊड़ जाता है। इसमें क्या करना? व्यवहार के कथन विनय के हो, किन्तु ऐसा मान बैठे कि उससे ऐसा हुआ और मेरे से वहाँ प्रभाव पड़ा, एक द्रव्य में दूसरे द्रव्य का प्रभाव पड़े तो प्रभाव क्या चीज है? प्रभाव क्या चीज है कि उसमें गयी? किसका प्रभाव? रूपचंदजी! कहते हैं कि, महाराज का बहुत प्रभाव पड़ता है। लोग ऐसा कहते हैं। वह तो उसकी योग्यता है तो निमित्त कहने में आता है। प्रभाव-फ्रभाव की बात तो व्यवहार से कथन चलता है। आहाहा..!

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- प्रभावित हुआ, वह तो बोलने में कथन है। प्रभावित तो उसकी योग्यता

से हुआ है, उसकी लायकात से समझा है तब निमित्त से प्रभावित हुआ ऐसा कथन चलता है। उसे निश्चयनय यथावत् कहती है कि उससे प्रभावित नहीं हुआ है। समझ में आया?

मुमुक्षु :-- सोनगढ़ की भूमि तो...

उत्तर :-- किसी को नहीं लगती, वह तो उसकी योग्यतावाले को लगता है। कहते हैं सही कि सोनगढ़ की गंध आ जाये, ऐसा होता है। आहाहा..! हीराभाई जब यहाँ आये थे न? आपके भाई, छोटे भाई हीराचंदजी आये थे न? यहाँ से थोड़ी बात ले गये थे तो पेपर में आया था, सोनगढ़ की गंध लेकर आये हैं। ऐसा पेपर में आया था। अरे.. भैया! वह तो उसकी बुद्धि में वह सत्य बात जची हो उसकी गंध है, पर की गंध किसी में आती नहीं। व्यवहार का कथन चले तो ऐसा मान ले।

व्यवहार जो झूठ कहता है, निश्चय उसको यथावत् कहता है। '**किसी को किसी में नहीं मिलाता है;...**' मिलावट नहीं करता। इस कारण से यहाँ कार्य होता है, ऐसे व्यवहार के कथन बहुत आये। समझ में आया? लेकिन वह बात, निश्चयनय कहती है कि ऐसा नहीं है, अपने ही कारण से कार्य हुआ है। द्रव्य के कारण कार्य होता है, पर्याय का कार्य पर्याय में होता है, पर्याय का कार्य पर्याय से होता है। ज्यादा से ज्यादा पर्याय का कार्य द्रव्य से होता है उतनी बात करे। परन्तु पर से पर्याय का कार्य होता है, ऐसा निश्चयनय नहीं कहती है। निश्चयनय तो यथावत् जैसी वस्तु की स्थिति स्वतंत्र है (ऐसा ही कहती है)।

व्यवहार कहे कि धर्मास्तिकाय के अभाव से सिद्ध ऊपर जा नहीं सकते। निश्चय यथावत् कहे कि अपनी योग्यता है तो वहाँ रहते हैं। बड़ी तकरार। धर्मास्तिकाय का अभाव है तो सिद्ध भगवान ऊपर जाते नहीं। सिद्ध भगवान को भी उसने रोका। और क्या बात करते हैं? दूसरी बात करते हैं कि इतनी शक्ति, मर्यादित ठराते हैं उसको। वहाँ तक रहना ऐसी मर्यादित (शक्ति है)। लेकिन मर्यादित शक्ति हो नहीं सकती, अनंत शक्ति अमर्यादित है। जितनी खिली हो उतनी अमर्यादित हो। इसलिये जाने की शक्ति तो है, परन्तु धर्मास्ति नहीं है इसलिये नहीं जाते हैं। ऐसा नहीं है। उसकी शक्ति की अपरिमितता की हद ही वहाँ तक रहने की है। उतनी शक्ति कम है ऐसा आरोप करना वह वस्तु की स्थिति में नहीं है।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- वह कहते हैं, उसमें लिखा है, बहुत आया है। देखो! सिद्ध की पर्याय में अनंत महत्ता, अनंत बेहद शक्तियाँ द्रव्य की अनंत शक्तियाँ हैं, वह शक्ति आगे नहीं जा सकती है ऐसी योग्यता मानते हैं तो अनंत को मर्यादा में ले आये। आहाहा..!

बाबुभाई! भगवान! तुझे भूल निकालनी पड़ेगी, हाँ! नहीं तो भगवान नहीं भासेंगे।

क्या कहते हैं? निश्चयनय जो वस्तु का स्वरूप स्वयंसिद्ध स्वतंत्र है; द्रव्य यानी वस्तु, गुण यानी शक्ति, पर्याय यानी दशा अपने कारण से स्वतंत्र है, पर के कारण पर स्वतंत्र है, ऐसा यथावत् निश्चयनय कहती है। वह, किसी को किसी में मिलाकर इसके कारण यहाँ हुआ और इसके कारण यहाँ हुआ, ऐसी बात नहीं करती है। निश्चयनय नहीं करती है। **'सो ऐसे ही श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है;...'** ऐसे ही श्रद्धान से समकित होता है। व्यवहार में कहा, ऐसे ही श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है। व्यवहारनय की श्रद्धा करने से मिथ्यात्व होता है। निश्चयनय ने जो यथार्थ कहा, ऐसी श्रद्धा से उसे समकित होता है। कहो, नेमिचंदभाई! इतना तो स्पष्ट कथन पड़ा है, हिन्दी भाषा में है। अभी तो गुजराती हो गया। बहुत पुस्तक हो गये। अभी तीन हज़ार नये छापने हैं। आहाहा..! ऐसा सत्य एक बार सुनकर उसकी श्रद्धा, रुचि तो करो कि बात तो ऐसी है, दूसरी बात है नहीं। पर के कारण से पर में हो और पर के कारण से पर में कुछ फेरफार हो (ऐसा है नहीं)।

पानी में आईसक्रिम आया तो पानी ठंडा हुआ, व्यवहारनय कहती है। निश्चयनय कहती है, अपनी पर्याय ठंडी होने के कारण ठंडी हुई है। अग्नि से पानी उष्ण हुआ, व्यवहारनय कहती है। अन्यथा कारण-कार्य कहती है। निश्चयनय कहती है कि अपनी उष्णपर्याय को पलटकर ठंडीपर्याय अपने स्पर्शगुण की पर्याय के कारण पानी ठंडामें से उष्ण हुआ। ठंडी पर्याय का व्ययकर उष्ण हुआ। अग्नि से उष्ण हुआ वह व्यवहार का कथन ऐसा मान ले तो मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया? आहाहा..!

मुमुक्षु :-- अकाल मृत्यु...

उत्तर :-- अकाल मृत्यु निमित्त से कथन है। भगवान ने देखा है कि उस समय मृत्यु होगी, किन्तु निश्चय से वह परमाणु की जाति ऐसी थी कि संक्रमण होकर उस ही समय में छूटने की तैयारी है। उसको अकाल मृत्यु निमित्त से कहा है। निश्चय से अकाल मृत्यु है नहीं। भगवान के ज्ञान में देखा कि उस समय देह छूट जायेगा, कर्म छूट जायेगा, आत्मा (छूट जायेगी), वह सब देखा है ऐसा होता है। देखा उस कारण से होता है ऐसा नहीं। होता तो अपने कारण से है, परन्तु अपनी पर्याय में जब छूटने का काल है तब छूटेगा। १०० वर्ष का आयुष्य लाया हो और ४५ वर्ष में मर जाये, वह व्यवहार का कथन है। ऐसा मान ले तो दृष्टि मिथ्यात्व है।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- धूल भी असर नहीं करता। क्या कहते हैं? पैसा, आधा पैसा तो काम करे? एक पाव पाई नहीं। पर में पाव पाई भी असर करे ऐसा मानना मूढ मिथ्यादृष्टि

पागल हो गया है। जैन धर्म को समझनेवाला नहीं है, पागल है ऐसा कहते हैं। मूलचंदभाई! समझ में आया? आहाहा..!

'**इसलिये उसका श्रद्धान करना।**' जितना स्वद्रव्य का स्वतंत्र कथन हो, स्ववस्तु, स्वशक्ति, स्वपर्याय विकारी या अविकारी। परवस्तु, परगुण और पर की पर्याय स्वतंत्र है, ऐसे जो कथन किये हों, उसका वैसे श्रद्धान करना। और उससे समकित होता है, '**इसलिये उसका श्रद्धान करना।**' निश्चय का श्रद्धान करना और व्यवहार की श्रद्धा, 'है' ऐसा जानकर श्रद्धान छोड़ना। समझ में आया? तब प्रश्न हुआ, शिष्य को प्रश्न हुआ। आपने तो सब निकाल दिया। तो शास्त्र में दो नय चली है उसका क्या करना? देखो प्रश्न।

'**यदि ऐसा है तो जिनमार्ग में दोनों नयों का ग्रहण करना कहा है, सो कैसे?**' शास्त्र में दोनों नयों को ग्रहण करने योग्य कहा है। वह ग्रहण का अर्थ नहीं समझता। दोनों नयों को। व्यवहार ग्रहण करना, व्यवहार ग्रहण करना, निश्यय ग्रहण करना ऐसा शास्त्र में बहुत आता है, ऐसा शिष्य कहता है। '**जिनमार्ग में दोनों नयों का ग्रहण करना कहा है,...**' देखो! 'ग्रहण' पर यहाँ वज़न है। '**सो कैसे?**'

'**समाधान :-- जिनमार्ग में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता से व्याख्यान है,...**' सुन! जैनमार्ग में किसी जगह सत्य बात, द्रव्य-गुण-पर्याय अपने से होते हैं, ऐसा निश्चय का कथन मुख्यता से व्याख्यान है। '**उसे तो 'सत्यार्थ ऐसे ही है'-ऐसा जानना।**' निश्चय का कथन हो कि आत्मा की पर्याय आत्मा से होती है, जड़ की पर्याय जड़ से होती है। इसके कारण से यहाँ होती है ऐसा नहीं है, ऐसा जहाँ निश्चय का कथन मुख्यता से किया उसने सत्यार्थ ऐसे ही है ऐसा जानना। निश्चय के कथन सच्चे हैं, ऐसा ही है ऐसा जानना।

'**तथा कहीं व्यवहारनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है,...**' देखो! वह तो व्यवहारनय की मुख्यता सहित व्याख्यान है। ज्ञानावरणीय से ज्ञान रुके, निमित्त से समकित होता है, वह तो व्यवहारनय की मुख्यता सहित व्याख्यान है। देखो, यहाँ मुख्यता तो ली। '**उसे 'ऐसे है नहीं,...**' व्यवहार कहता है ऐसा नहीं है। परन्तु '**निमित्तादिकी अपेक्षा उपचार किया है।**' निमित्त का ज्ञान कराने को, समकित के काल में निमित्त कौन था? श्रवण किसका था? मूर्ति कौन थी? उतना निमित्त का ज्ञान कराने को व्यवहार से बात कही है, व्यवहार की मुख्यता से। परन्तु उससे हुआ है ऐसा मानना नहीं। निमित्तादि, प्रयोजन साथ में होता है न, दिखे कि यही वस्तु थी और यहाँ कार्य हुआ। '**निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है।**' देखो! यहाँ तो उपचार किया, निमित्त को उपचार कहा। '**निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है--ऐसा**

जानना'। निश्चय का, एक-एक द्रव्य का, एक-एक पदार्थ का स्वयं स्वतंत्र शक्ति, अवस्था का जहाँ-जहाँ वर्णन हो वहाँ उसको सत्य जानना। परन्तु व्यवहार का कथन एकदूसरे में मिलावट करके किया हो (तो) वहाँ ऐसा नहीं है, वह झूठी बात है। समझ में आया? ऐसा नहीं है। व्यवहार कहता है ऐसा नहीं है। लो, निश्चय कहता है ऐसा है। शास्त्र का अर्थ करने की पद्धति को न जाने और तकरार करे, देखो! यह तो टोडरमल ने कहा है, आप्त के वाक्य में कहाँ है? ये आप्त का वाक्य क्या है? '**सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं यदुक्तं**' उस पर से तो यह सब बात चलती है। समझ में आया?

मुमुक्षु :-- कुन्दकुन्दाचार्य की मूल गाथा है।

उत्तर :-- मूल गाथा दी है, मोक्षपाहुड़ की।

भाई! भगवान तो ऐसा कहते हैं कुन्दकुन्दाचार्य मोक्ष अधिकार में, जितना व्यवहार का (कथन हो), राग को मोक्षमार्ग कहा हो, दया, दान को मोक्षमार्ग कहा हो वह, मोक्षमार्ग की अंतर दशा निश्चय हो, उसमें निमित्त देखकर कहा है। परन्तु उससे होता है ऐसा कहा हो, वह ऐसे नहीं है। व्यवहार से निश्चय मोक्षमार्ग होता है ऐसा नहीं है। आहाहा..! समझ में आया? व्यवहार से मोक्षमार्ग होता है ऐसा नहीं है, ऐसा जानना।

मुमुक्षु :-- वहाँ 'है' ऐसा लिखा है।

उत्तर :-- वहाँ 'है' लिखा हो, वहाँ नहीं है ऐसा मानना। व्यवहारनय कहती है कि है, होता है। निश्चय कहता है ऐसा नहीं है। 'है' में 'नहीं है' लगा देना। जितने कथन शास्त्र में व्यवहार का आये, व्यवहार अर्थात्.. स्वआश्रय निश्चय, पराश्रित व्यवहार। एक तत्त्व का पर के आश्रय का कथन चले, इसने इसकी सेवा करी, इसने इसका ऐसा किया तो उसे अच्छा हुआ, दवाई की तो रोग मिटा, इसने बहुत उपचार (किया), वह सब कथन निमित्त के हैं। वह ऐसे नहीं है। उसकी पर्याय उस काल में उस प्रकार से होनेवाली थी और हुई वह सच्ची बात यथार्थ है। समझ में आया? जगत के साथ बड़ी (तकरार), भाई! इसमें जगत के साथ मिलान हो ऐसा नहीं है।

देखो, यह अधिकार महान मक्खन है। यह मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार मक्खन है, उसमें भी यह अधिकार सार में सार निश्चय-व्यवहार का विवेक क्या है, यह दर्शाते हैं। व्यवहार तो थोड़ा छल देखकर सीधा सर्वस्व हो जाता है। थोड़ा निमित्त देखा, यहाँ विकार हुआ और निमित्त देखा तो (कहने लगता है), हाँ, उससे हुआ। समझ में आया? शरीर और आत्मा का सम्बन्ध देखकर, निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध देखकर कहने लगता है, हाँ, वह शरीर आत्मा का है, हाँ! शरीर जीव का है, हाँ! इस

प्रकार व्यवहार सर्वस्व हो जाता है।

मुमुक्षु :-- दिवार को शरीर होता है?

उत्तर :-- दिवार को भी शरीर है परमाणु, उसमें क्या है? उसके औदारिक शरीर के परमाणु अलग जातिरूप परिणमे हैं। समझ में आया? निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध देखकर (कहता है)। शरीर की पर्याय शरीर के कारण, आत्मा की पर्याय आत्मा के कारण। मात्र दोनों का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध देखकर व्यवहारनय सर्वस्व हो जाता है कि आत्मा के कारण शरीर चलता है, शरीर चले इसलिये आत्मा को चलना पड़े। वह मान्यता बिलकुल झूठी है। समझ में आया?

'निमित्तादि की अपेक्षा...' निमित्त उपचार, व्यवहार **'उपचार किया है--ऐसा जानना। इसप्रकार जानने का नाम ही दोनों नयों को ग्रहण है।'** जानने का नाम ग्रहण है। व्यवहार को अंगीकार करना, निश्चय को अंगीकार करना ऐसा 'ग्रहण' शब्द का अर्थ नहीं है। इसप्रकार जानना, इसप्रकार जानना माने क्या? निश्चयनय से मुख्यता से जहाँ निश्चय का कथन हो, वह यथावत् है ऐसा जानना। व्यवहार का कथन हो वहाँ, 'ऐसे नहीं है' ऐसा जानने का नाम ही, नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है। दोनों नयों को जानना उसका नाम ग्रहण है। लेकिन निश्चय भी आदरणीय और व्यवहार भी आदरणीय है, यह बात इसप्रकार भगवान ने तीन काल तीन लोक में कही नहीं है।

लो, व्यवहार जाना हुआ प्रयोजनवान है, वह बात सिद्ध की, सिद्ध की। समझ में आया? जाना हुआ प्रयोजनवान है। आत्मा अपने आश्रय से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र स्व के आश्रय से प्राप्त करे उसमें, रागादि मंदता हो, भक्ति, पूजा, दान, दया हो तो उसे जानने लायक कहा है। उस व्यवहार को ग्रहण करना अर्थात् जानना कि व्यवहार है। जानना ऐसा कहा है। ग्रहण करना यानी आदरणीय है ऐसा भगवान ने व्यवहारनय को कहीं आदरणीय कही नहीं है। कथनशैली में ऐसा आवे, वस्तु के स्वरूप में ऐसा है नहीं। समझ में आया?

'जानने का नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है। तथा दोनों नयों के व्याख्यान को समान सत्यार्थ जानकर...' देखो! निश्चय का कथन, स्वतत्त्व आश्रय से हो वह सच्चा, और पर से कहा हो पर में, वह भी सच्चा, ऐसा समान जानकर, सत्यार्थ जानकर, इसप्रकार भी है और इसप्रकार भी है। कर्म से आत्मा अटके, विकार आत्मा से हो, दोनों बात लो। दो बात हो नहीं सकती।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- दो बात यानी कि यहाँ निमित्त है उसका ज्ञान करने से अनेकांत।

उससे हुआ नहीं है उसका नाम अनेकांत है। कर्म से विकार नहीं हुआ है, आत्मा से हुआ है उसका नाम अनेकांत है। अस्ति और नास्ति का नाम अनेकांत है। इससे भी हो और उससे भी हो, उसमें अनेकांत कहाँ रहा? वह तो फूदडीवाद हुआ। दो द्रव्य की एकता हुई। समझ में आया?

शास्त्र में दोनों नयों के व्याख्यान को समान और सत्यार्थ है, इसप्रकार से भी व्यवहार से है और व्यवहार से भी है ऐसे भ्रमरूप प्रवर्तने से तो दोनों नय जानने योग्य करना नहीं कहा है। इसप्रकार ग्रहण करने योग्य नहीं कहा है। देखो, यह बात वर्तमान में बहुत फेरफार चाहती है। लोग नय के नामपर और शास्त्र में लिखावट आये तो कहे, ये लिखा। किस नय का कथन है? व्यवहार या निश्चय? व्यवहार का कथन निमित्त का ज्ञान कराने को (किया है), परमार्थ बात वह व्यवहार नहीं करता है। ऐसा न जाने तो उसे दोनों सत्य, दोनों निश्चय और व्यवहार आदरणीय है (ऐसा माननेपर) वह मिथ्यादृष्टि होता है और भ्रमणा में जाता है।

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

वीर सं.–२४८८, चैत्र सुद–११, रविवार,
दि. १५–४–१९६२,
सातवाँ अधिकार, प्रवचन नं. १७

यह, मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अध्याय है। जैन मतानुयायी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप। सूक्ष्म विषय है। अनादि काल का तकरार का विषय है। तकरार को टालने का विषय है। कोई कहता है, शास्त्र में सब कथन आये वह सब आदरणीय हैं। क्योंकि वह सब तो भगवान द्वारा कहे गये हैं। समझ में आया? शास्त्र में सब कथन आया वह सब आदरणीय है। व्यवहारनय से कथन आया हो वह भी आदरणीय है और निश्चय से आया हो वह भी आदरणीय है, ऐसा कहते हैं। उसका समाधान करते हैं, उसका समाधान करते हैं।

‘जिनमार्ग में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है।’ समझ में आया? वह पैरेग्राफ हो गया है, फिर से (लेते हैं)। प्रथम पंक्ति उत्तर की। **‘जिनमार्ग**